मकड़ियों का अद्भुत संसार
पुस्तक-चर्चा

किशोर पंवार

मकड़ियों को लोगों ने अपने-अपने अन्दाज़ में देखा है। जनमानस में घृणा की दृष्टि और डर की प्रमुखता है। वहीं फिल्मों में मकड़ियों के संसार को रहस्य और रोमांच के दायरे में समेटा गया है। इसी सन्दर्भ में मुझे *पारस मणि* नामक एक पुरानी संगीतमय फिल्म की याद आ रही है जिसमें फिल्म का नायक पारस मणि प्राप्त करने के लिए एक विशाल मकड़ी और उसके जाले से जूझता दिखाई दिया था। अन्य डरावनी एवं भुतहा फिल्मों में मकड़ियाँ तो नहीं दिखाई जातीं पर उनके बड़े-बड़े जालों की भरमार रहती है। हॉलीवुड की विज्ञान फन्तासी फिल्मों में भी स्पाइडर-मैन जैसी कल्पना हमें एक अलग ही दुनिया में ले जाती है जहाँ स्पाइडर-मैन लोगों का मददगार है।

इसके अतिरिक्त वैज्ञानिकों का अन्दाज़-ए-बयाँ तो कुछ अलग ही है जो मकड़ियों को एक विशिष्ट, विचित्र एवं अद्भुत जीव के रूप में देखते हैं। उनकी रचना एवं जीवन वृत्त का बारीकी-से अध्ययन कर, उनसे जुड़े रहस्यों को सटीकता के साथ उजागर करते हैं।

पुस्तक *मकड़ियों का अद्भुत संसार* की दृष्टि पूर्णत: लोक विज्ञान आधारित है जिसमें वैज्ञानिक तथ्यों को बड़े ही सरल और रोचक तरीके से प्रस्तुत किया गया है। इस पुस्तक की सामग्री उत्कृष्ट और भाषा प्रवाहपूर्ण है। उसकी कथामयी जीवन्त प्रस्तुति इसी बात का स्पष्ट प्रमाण है।

विज्ञान के क्षेत्र में अक्सर देखा जाता है कि अच्छे वैज्ञानिक निपुण वक्ता व लेखक नहीं होते। वहीं अच्छे प्राध्यापक बढ़िया लेखक और वक्ता तो हो सकते हैं पर अक्सर उनमें पैनी वैज्ञानिक दृष्टि का अभाव होता है। परन्तु इस पुस्तक के लेखक डॉ. विपुल कीर्ति शर्मा में ये सभी विरल और विलक्षण गुण भलीभाँति देखने को मिलते हैं। वे लोकप्रिय प्राध्यापक, अच्छे लेखक और उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं शोधकर्ता भी हैं। साथ ही, एक उम्दा पुरस्कृत फिल्मकार भी।

इस पुस्तक में कुल 22 अध्याय हैं जिनकी सामग्री को 114 पृष्ठों में समेटा गया है जिनमें मकड़ियों की दुनिया की जटिल-से-जटिल बातें भी इतनी रोचकता के साथ परोसी गई हैं कि भोजन की यह थाली षट रसों से भरपूर लगती है और ललचाती भी है कि अब आगे और क्या मिलेगा!

'क्या होती हैं मकड़ियाँ, कब धरती पर आईं मकड़ियाँ' जैसे पाठ इनकी शारीरिक रचना की बारीकियों और उनके जैव-विकास के प्रक्रम को बहुत ही सटीकता के साथ हम से रूबरू कराते हैं। एमेशिया, ब्लैक विडो, नेफिला, टेरेन्ट्युला, डरावनी वुल्फ मकड़ियाँ, क्रेब स्पाइडर आदि आलेख तरह-तरह की मकड़ियों के रूप-रंग और क्रियाकलापों के बारे में ठोस वैज्ञानिक जानकारी के स्रोत हैं।

एमेशिया जैसी नकलची मकड़ियाँ जो लाल चींटे ओएकोफिला का रूप धर उन्हें ही कैसे धोखा देती हैं, का किस्सा तो बहुत ही रोमांचक है तथा बेहतरीन शैली में लिखी गई एक शानदार दास्तान है।

ब्लैकविडो में नर का प्रेमालाप, गिटार बजाना एवं दुल्हन को घूँघट में रखना आदि उपमाएँ तो कोई संवेदनशील प्रेमीमन और भाषाविद् ही दे सकता है। यह गुण लेखक को विरासत में मिला है क्योंकि उनके पिता श्री अशोक शर्मा भी जाने-माने प्राध्यापक एवं विद्वान लेखक हैं।

नेफिला, गोताखोर आर्जिरोनेटा, स्पाइडरमैन की परिकल्पना, मकड़ी के जीन से बने ट्रांसजेनिक रेशम कीट – मकड़ियों पर की जा रही नवीनतम शोध पर आधारित ये पाठ जन उपयोगी जानकारी से भरपूर हैं।

हालाँकि, हिन्दी की इस पुस्तक में जेनेरा, फैमिली आदि अँग्रेज़ी शब्दों की जगह यदि वंश और कुल जैसे शब्दों का उपयोग किया जाता और डीपोलेराइज़्ड (बिगाड़ दिए गए) शब्दों से बचा जाता तो शायद पुस्तक और बेहतर हो सकती थी।

कुल मिलाकर, यह पुस्तक रोचक, नवीनतम जानकारियों से परिपूर्ण और पठनीय है। पुस्तक में इस्तेमाल फोटो स्वयं लेखक द्वारा खींचे गए हैं, जो बेहद सुन्दर और स्पष्ट हैं। इसके प्रकाशन हेतु एनबीटी के सम्पादक प्रकाश चतुर्वेदीजी और लेखक शर्माजी बधाई के पात्र हैं। इसी तरह की और भी लोकोपयोगी पुस्तकों की उम्मीद दोनों से की जा सकती है ताकि हिन्दी में अच्छी विज्ञान पुस्तकों की जो कमी नज़र आती है, उसकी यथासम्भव पूर्ति हो सके।

आइए, आगे इसी पुस्तक का एक रोचक अध्याय पढ़ते हैं।

किशोर पंवार: शासकीय होल्कर विज्ञान महाविद्यालय, इन्दौर में बीज तकनीकी विभाग के विभागाध्यक्ष और वनस्पतिशास्त्र के प्राध्यापक रहने के बाद सेवानिवृत्त। 'होशंगाबाद विज्ञान शिक्षण कार्यक्रम' से लम्बा जुड़ाव रहा है जिसके तहत *बाल वैज्ञानिक* के अध्यायों का लेखन और प्रशिक्षण देने का कार्य किया है। *एकलव्य* द्वारा जीवों के क्रियाकलापों पर आपकी तीन किताबें प्रकाशित। शौकिया फोटोग्राफर, लोक भाषा में विज्ञान लेखन व विज्ञान शिक्षण में रुचि।